International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 26-11-2022; Accepted: 12-12-2022; Published: 28-12-2022
Volume 8, Issue 6, 2022, Page No. 151-159

प्रथम विश्वयुद्धः कारण एवं प्रभाव– एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

उत्सव कुमार
विद्यार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, डी. ए. वी पी.जी कॉलेज, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

प्रथम विश्वयुद्ध मानव जनित एक भयंकर त्रासदी थी जिसने संपूर्ण मानव विकास को प्रभावित किया। सन 1914 से शुरू हुए प्रथम विश्व युद्ध में तत्कालीन छोटी–बड़ी घटनाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा राष्ट्रों ने अपने हितों की पूर्ति हेतु उन सभी साधनों का इस्तेमाल किया जिससे वे अधिक भौगोलिक क्षेत्र और धन को प्राप्त कर सकें। केंद्रीय शक्ति तथा मित्र राष्ट्र के मध्य हुए इस युद्ध ने भविष्य में होने वाले उन महायुद्धों के मार्ग को भी प्रशस्त किया जो धन तथा भौगोलिक क्षेत्रों की लालसा से लड़े गए। इस महायुद्ध ने संपूर्ण मानव जाति को पतन के ऐसे गर्त में धकेल दिया जहां खतरनाक परमाणु और रासायनिक हथियारों ने मानव जाति के साथ–साथ समस्त जीव–जंतुओं और पर्यावरणीय विकास को बाधित किया। प्रथम विश्ववयुद्ध ने विश्व के प्राचीनतम साम्राज्यों को ध्वस्त करने के साथ यूरोप में भौगोलिक क्षेत्रों के विभाजन को एक नई गति प्रदान की जिसके कारण नए–नए राष्ट्रों का जन्म हुआ जिनमें राष्ट्र–राज्य के साथ राष्ट्रवाद की भावना का विकास हुआ जो कालांतर में कई अन्य युद्धों का साक्षी बना। अतः विभिन्न तथ्यों और घटनाओं को ध्यान में रखकर प्रथम विश्व युद्ध के कारण और प्रभाव की विस्तृत विवेचना इस शोध में वैज्ञानिक ढंग से की गई है।

मूलशब्दः विश्वयुद्ध, त्रासदी, राष्ट्र, केंद्रीय शक्ति, मित्र राष्ट्र, भौगोलिक क्षेत्रों, परमाणु– रासायनिक हथियार, साम्राज्य, राष्ट्र राज्य व राष्ट्रवाद

प्रस्तावना

विश्व के सबसे विनाशकारी तथा बड़े युद्धों में से एक, प्रथम विश्वयुद्ध की शुरुआत 28 जुलाई सन 1914 को ऑस्ट्रिया–हंगरी द्वारा सर्बिया पर आक्रमण करने के साथ हुई। ऑस्ट्रिया–हंगरी द्वारा सर्बिया पर आक्रमण की घोषणा के साथ ही साथ संसार के अनेक देश इस युद्ध में कूद पड़े जिनकी अपनी अलग–अलग आकांक्षाएं थी तथा यह युद्ध एक महा युद्ध के रूप मे परिवर्तित हो गया, जिसे हम प्रथम विश्व युद्ध के रूप में जानते हैं। इस युद्ध में समस्त विश्व दो खेमों मैं विभाजित था। जिसे मित्र राष्ट्र तथा केंद्रीय शक्तियों के नाम से जाना गया। मित्र राष्ट्र कहलाने वाले देशों में फ्रांस, ब्रिटेन, रूस, इटली, अमेरिका आदि देश थे तो केंद्रीय शक्ति के खेमे में जर्मनी, ऑस्ट्रिया–हंगरी, तुर्की जैसे देश थे। यह युद्ध यूरोप से शुरू होकर धीरे–धीरे एशिया, उत्तरी अमेरिका, अफ्रीका आदि महाद्वीपों में फैल गया और कुछ समय पश्चात इसमें यूरोपीय देशों ने अपने उपनिवेशो को भी शामिल कर लिया। इस प्रकार, इस युद्ध में अमेरिका,जापान,चीन,ब्रिटिश भारत जैसे आदि देशों को शामिल होना पड़ा। इस प्रथम महायुद्ध में अभूतपूर्व जनहानि हुई तथा इसमें अत्यधिक रासायनिक हथियारों एवं गोला–बारूदो का इस्तेमाल किया गया जिससे विश्व में पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न हो गई। युद्ध में विमानों से सामान्य नागरिकों पर भारी बम वर्षा की गई जिससे अत्यधिक संख्या में निर्दोष नागरिकों की मृत्यु हुई तथा इस युद्ध में विश्व के अनेक देशों के सभी वर्गों के लोगों ने अपने–अपने देशों के समर्थन में युद्ध में भाग लिया जिसमे समस्त राष्ट्रीय संसाधनों का उपयोग किया गया। इस महायुद्ध के दौरान विश्व के 4 सबसे महत्वपूर्ण एवं प्राचीन साम्राज्य छिन्न–भिन्न हो गए जिनमें जर्मन साम्राज्य, ऑस्ट्रो–हंगेरियन साम्राज्य, रूसी साम्राज्य तथा ऑटोमन साम्राज्य के नाम आते हैं। नवंबर 1918 में जर्मनी द्वारा बिना शर्त आत्मसमर्पण के साथ ही यह प्रथम महायुद्ध समाप्त हुआ परंतु औपचारिक संधियों पर हस्ताक्षर करते करते कई माह बीत गए। इस महायुद्ध के परिणामस्वरुप विश्व मे सामाजिक,आर्थिक एवं राजनीतिक बदलाव दृष्टिगोचर हुए तथा इसी के साथ–साथ यूरोप के मानचित्र में व्यापक संशोधन हुए जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव बीसवीं शताब्दी के दौरान देखने को मिला। प्रथम महायुद्ध के उत्तरदायित्व एवं कारणों से संबंधित मुद्दों पर आज भी बहस जारी है पर इस पर कोई सहमति नहीं बन पाई है कि यह युद्ध क्यों हुआ?

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोधपत्र की रचना निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु किया गया है–

1. प्रथम विश्वयुद्ध की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि। .
2. प्रथम विश्व युद्ध के कारण तथा उसके प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन।
3. प्रथम विश्व युद्ध और राष्ट्रों के मध्य संबंधों की समझ हेतु।

शोध प्रविधि

इस शोधपत्र के निर्माण में द्वितीय स्रोतों से अधिकांश तथ्यों को ग्रहण किया गया है। जिसमें प्रसिद्ध पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, विभिन्न लघु और विस्तृत आलेखों, शोध पत्रों और समाचार पत्रों को शामिल किया गया है। शोध पत्र की मौलिकता और विश्वसनीयता हेतु इसमें व्यक्तिगत समझ और विचारों को भी उचित रूप से स्वीकार किया गया है।

प्रथम विश्व युद्ध की तरफ ले जाने वाली घटनाएं

युद्ध एक ऐसी विभीषिका होती है जो 1 दिन में शुरू नहीं होती। इसके पीछे पर्याप्त कारण होते हैं जो चरणबद्ध तरीके से एक–दूसरे से जुड़ते जाते हैं और इस प्रकार यह सारे मिलकर के ऐसी परिस्थिति का निर्माण करते हैं जहां पर विश्वास की कमी संदेश तथा भय की स्थिति बन जाती है जहां एक छोटी सी चिंगारी एक बड़े आपको लगा सकती है ठीक उसी प्रकार एक छोटी सी तत्कालिक गलती एक बड़े युद्ध को जन्म देती है इस प्रकार नीचे कुछ छोटी–छोटी घटनाओं की व्याख्या की जा रही है जो प्रथम विश्व युद्ध के कई वर्ष पूर्व हुई थी पर इन सारी घटनाओं ने ही प्रथम विश्वयुद्ध का मार्ग प्रशस्त किया जो निम्नलिखित है –

फ्रांस– प्रशा युद्ध और जर्मनी का पुनः एकीकरण

प्रशा ने 1870 के शलेजविग– होल्सटीन युद्ध में डेनमार्क को पराजित किया तथा इसमें डेनमार्क की पराजय के साथ–साथ शलेजविग के महान डची पर प्रशा का अधिकार हो गया.इसके उपरांत प्रशा ने फ्रांस को नीचा दिखाने का निर्णय किया। फ्रांस तथा प्रशा के बीच 1870 में हुआ युद्ध फ्रांस को किसी भी जर्मन विरुद्ध संगठन मे शामिल होन के लिए बाध्य कर दिया। फ्रांस एक अग्रणी समुंद्री और उपनिवैशिक शक्ति था। 1870 में प्रशा ने फ्रांस पर आक्रमण कर दिया और इस युद्ध में फ्रांस की पराजय के साथ–साथ प्रशा ने फ्रांस के ऊपर भारी हर्जाना लगाया। प्रशा ने हर्जाने के साथ–साथ फ्रांस से उसके दो प्रदेश अल्सास और लोरेन भी छीन लिया। जर्मनी द्वारा फ्रांस पर थोपी गई संधि के द्वारा इन दोनों प्रांतों को जर्मनी में शामिल कर लिया गया। फ्रांस के पराजित होने के बाद उसको अपमानित करने के लिए जर्मन साम्राज्य की स्थापना का उत्सव पेरिस में मनाया गया इससे फ्रांस को काफी अपमानित महसूस करना पड़ा तथा फ्रांस के पेरिस में मनाए गए विजय उत्सव में प्रशा नरेश विलियम को जर्मनी का सम्राट घोषित किया गया तथा बिस्मार्क को आधुनिक जर्मनी का चांसलर बनाया गया। जर्मनी द्वारा फ्रांस पर थोपे गए हर्जाने को फ्रांस ने आश्चर्यजनक तेजी से भर दिया तथा कुछ ही वर्षों में फ्रांस यूरोप की एक महाशक्ति बन बैठा। फ्रांस ने सरकार के बार–बार बदलने, राजनीतिक संकट और हार के बावजूद, राजनीतिक स्थिरता प्राप्त कर ली तथा कला, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, साहित्य के क्षेत्रों में अभूतपूर्व विकास किया। पूंजी निवेश से देश में आर्थिक स्थिरता तो प्राप्त कर ली किंतु दो प्रांत खोने का दर्द वह ना भूल सका। इस प्रकार वर्ष 1914 तक फ्रांस की विदेश नीति में अल्सास और लोरेन का मुद्दा बना रहा तथा इससे यह सुनिश्चित हो गया कि किसी भी अंतरराष्ट्रीय संगठन/गठबंधन में फ्रांस सर्वदा जर्मनी के विरुद्ध रहेगा। इधर बिस्मार्क ने, जर्मनी के एकीकरण का जो सपना देखा था वह पूरा हो गया तथा जर्मन राज्यों ने प्रशा के नेतृत्व को स्वीकार कर लिया और इस प्रकार जर्मन साम्राज्य की स्थापना का उत्सव पेरिस में मनाया गया और जर्मन साम्राज्य की बागडोर बिस्मार्क के हाथ में आ गई। बिस्मार्क के नेतृत्व में जर्मनी ने अगाध शक्ति अर्जित की तथा यूरोप के एक महाशक्ति के रूप में अपना स्थान सुदृढ़ कर लिया।

इटली का पुनः एकीकरण

इटली का पुनरू एकीकरण 19वीं शताब्दी की एक महत्वपूर्ण घटना थी। वियना सम्मेलन 1814–15 में इटली को अनेक राज्यों में विभाजित छोड़ दिया गया था। इनके पुनरू एकीकरण में अनेक वर्ष लग गए साडिनिया राजतंत्र इटली के एकीकरण का केंद्र बिंदु बन गया। फ्रांस ने 1860 में इटली के ष्सवायष प्रदेश पर अधिकार कर लिया जो फ्रांस के सम्राट नेपोलियन तृतीय और ऑस्ट्रिया के राजा के मध्य् हुए समझौते का परिणाम था। 1860 तक लाम्बाडी, पार्मा, सिसली आदि को इटली में मिला लिया गया तथा मार्च 1861 में इटली के राजतंत्र की स्थापना हुई। 1866 में ऑस्ट्रेलिया के वेनेशिया प्रांत का इटली में विलय हो गया। फ्रांस तथा इटली के मध्य हुए समझौते के अनुसार 2 वर्ष के भीतर रोम से फ्रांस की सेनाओं को हटा लिया गया और बदले में इटली ने रोम की स्वतंत्रता का आदर करने का वचन दिया। उस समय तक रोम इटली के साम्राज्य से बाहर था। फ्रांसीसी सेना की उपस्थिति रोम में बनी रही क्योंकि नेपोलियन तृतीय इसे पोप के लिए सुरक्षित रखना चाहता था। फ्रांसीसी सेना को रोम से ना हटाए जाने के कारण इटली का एकीकरण पूरा नहीं हो सका तथा इससे इटली क्रुद्ध हो गया। प्रशा के साथ युद्ध में फ्रांस ने अपनी पराजय देख इटली से सहायता मांगी पर 1870 में फ्रांस की सहायता करने से इटली ने इंकार कर दिया क्योंकि फ्रांस ने रोम से अपनी सैनाऐ नहीं हटाई थी। युद्ध में अपनी स्थिति कमजोर देख फ्रांस ने रोम से अपनी सेना ने वापस बुला ली पर तब तक पहले मोर्चे पर फ्रांस की हार हो चुकी थी। रोम से सेना बुला लेने के बाद रोम का इटली में विलय संभव हुआ तथा इस प्रकार इटली का पुनः एकीकरण संभव हो पाया।

बिस्मार्क ने फ्रांस की पराजय के पश्चात अपनी कूटनीति को रूस और ऑस्ट्रिया –हंगरी के संदर्भ में विकसित करने का निर्णय किया। पोलैंड के 18 वीं शताब्दी के विभाजन के बाद उस देश का अस्तित्व ही नहीं रहा था अतः जर्मनी रूस और ऑस्ट्रिया–हंगरी साम्राज्य की साझी सीमाएं थी। फ्रांस की पराजय ने ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री को यह विश्वास दिला दिया कि उसके देश का भविष्य जर्मनी के साथ जुड़ गया है। शीघ्र ही ऑस्ट्रिया के प्रधानमंत्री की जगह एक हंगरीवासी ने 1871 में प्रधानमंत्री का पद ग्रहण किया। वह जर्मनी के साथ संधि करने के लिए तैयार था। रूस तो 1870 के युद्ध में तटस्थ रहा था। रूस–जर्मन संबंध जो पहले ही सौहार्दपूर्ण थे बिस्मार्क ने उनको और सुधारने का प्रयास किया। बाल्कन प्रदेश के संबंध में रूस और ऑस्ट्रिया हंगरी के संबंधों में तनाव थे फिर भी बिस्मार्क में साहस किया। रूस,जर्मनी और ऑस्ट्रिया–हंगरी के राज्याध्यक्षो ने एक दूसरे के देश की यात्राएं की। बिस्मार्क की कूटनीति के परिणाम के रूप में 1872 में इन तीनों देशों के बीच एक संधि हुई इस संधि द्वारा रूस तथा ऑस्ट्रिया–हंगरी बाल्कन प्रदेशों में एक–दूसरे के हितो के विरूद्ध कार्य न करने का निर्णय किया।

द्विपक्षीय संधि (ऑस्ट्रिया जर्मन संधि) 1879

यूरोप में बिस्मार्क एक शक्तिशाली नेता के रूप में उभरा था। उसको यह चिंता थी कि रूस जर्मनी पर तो ना सही पर ऑस्ट्रिया–हंगरी पर अवश्य आक्रमण करेगा। बिस्मार्क में संधियों की नई नीति अपनाई उसने ऑस्ट्रिया–हंगरी के साथ एक गुप्त और रक्षात्मक संधि पर हस्ताक्षर किए। इस संधि में व्यवस्था की गई कि यदि रूस द्वारा जर्मनी अथवा ऑस्ट्रिया,किसी पर भी आक्रमण किया गया तो दोनों देश मिलकर उसका मुकाबला करेंगे.यह भी निश्चय किया गया कि यदि दोनों मित्रों में से किसी एक पर किसी भी दो अन्य देशों के द्वारा आक्रमण किया गया तब भी वे मिलकर अपनी रक्षा करेंगे। इस संधि का उद्देश्य जर्मन–ऑस्ट्रिया मित्रता को मजबूत करना तथा सामान्य बनाए रखना था।

तीनों सम्राटों के संघ का नवीनीकरण 1881

उपरोक्त जर्मन ऑस्ट्रिया की गुप्त संधि में रूस और फ्रांस की सुरक्षा की व्यवस्था नहीं की गई थी। रूस के साथ कोई विवाद ना होने के कारण बिस्मार्क में 1881 में तीनों सम्राटों के संघों का नवीनीकरण किया। इस नए समझौते में यह प्रावधान था कि यदि जर्मनी,रूस अथवा ऑस्ट्रिया का किसी चौथे देश के साथ युद्ध हुआ तो शेष दोनों साम्राज्य देश तटस्थ रहेंगे। सर्विया को अपनी सुरक्षा की गारंटी की आवश्यकता थी। 1878 में रूस ने सर्बिया की अपेक्षा बुल्गारिया को प्राथमिकता दी थी। सबिया और ऑस्ट्रिया में विशेष पारस्परिक मित्रता नहीं थी फिर भी उन्होंने जून 1881 में एक संधि पर हस्ताक्षर किए। दोनों ने एक दूसरे के प्रति मित्रता का वचन दिया परंतु यह दोनों देश एक समान शक्तिशाली नहीं थे। बुल्गारिया के साथ संबंधों के प्रश्न पर रूस और ऑस्ट्रिया–हंगरी के मध्य तीव्र मतभेद उत्पन्न हो गए। इस कारण रूस ने 1887 में तीनों सम्राटों के संघ का त्याग कर दिया किंतु बिस्मार्क ने तत्परता दिखाते हुए रूस के साथ पुनरूआश्वासन की संधि संपन्न की। यह संधि 1890 तक प्रभावी रही। इस संधि मे यह व्यवस्था की गई थी कि यदि रूस अथवा जर्मनी का किसी अन्य शक्तिशाली देश से युद्ध हुआ तो दूसरा देश तटस्थ रहेगा ताकि संघर्ष का क्षेत्र सीमित रह सके।

त्रिकोण संधि (त्रिमैत्री) 1882

इटली बर्लिन कांग्रेस से खाली हाथ वापस आ गया था। इटली तथा ऑस्ट्रिया के मध्य अनेक मतभेद थे तथा इटली ऑस्ट्रिया के कुछ प्रदेशों पर दावा कर रहा था। वह ट्रिनटीने तथा ट्रीस्टे प्राप्त करना चाहता था। इटली को सुझाव दिया गया था कि उसे बदले में अल्बेनिया, त्रिपोली अथवा ट्यूनीशिया के प्रदेश दिए जा सकते हैं, परंतु इटली को उसमें कोई रुचि नहीं थी। बर्लिन कांग्रेस मे फ्रांस की कोई विशेष भूमिका नहीं थी। वह तुर्की साम्राज्य के भूतपूर्व प्रदेश उत्तरी अफ्रीका स्थित अल्जीरिया का शासक बन ही चुका था। मोरक्को में भी फ्रांस को महत्वपूर्ण अंश प्राप्त था। ट्यूनीशिया उत्तरी अफ्रीका में अल्जीरिया के साथ लगता हुआ प्रदेश है। वहां फ्रांस और इटली दोनों आसानी से पहुंच सकते थे। बर्लिन कांग्रेस के 3 वर्ष पश्चात फ्रांस ने अल्जीरिया स्थित अपनी सेना के द्वारा ट्यूनीशिया पर अधिकार प्राप्त कर लिया। इससे इटली को गहरा धक्का लगा। इटली ने जर्मनी से मित्रता करने की इच्छा प्रकट की ताकि वह फ्रांस के विरुद्ध शक्ति संतुलन अपने पक्ष में कर सकें। उधर बिस्मार्क फ्रांस को अलग–थलग करके ऑस्ट्रिया के साथ अपने देश की मैत्री को और अधिक सशक्त बनाना चाहता था। बिस्मार्क ने इटली को सुझाव दिया कि जर्मनी, इटली एवं ऑस्ट्रिया–हंगरी मिलकर एक संधि करें और एक गठबंधन स्थापित करें। ट्यूनीशिया पर तो फ्रांस का अधिकार हो गया था परंतु उसके निकट स्थित त्रिपोली अथवा लीबिया को जर्मनी की सहायता से इटली आसानी से तुर्की से छीन सकता था। अंततः बिस्मार्क ने इटली को मना लिया कि फ्रांस को नियंत्रण में रखने के लिए वह जर्मनी–ऑस्ट्रिया द्विपक्षीय संधि में शामिल हो जाए। इस तरह 20 मई 1882 को इन तीनों देशों ने एक गुप्त संधि पर हस्ताक्षर करके एक त्रिमैत्री को वास्तविक रूप प्रदान किया। इसके प्रावधानों के अनुसार इटली को आश्वासन दिया गया कि यदि फ्रांस उस पर आक्रमण करेगा तो उसे तुरंत जर्मनी तथा ऑस्ट्रिया–हंगरी सहायता प्रदान करेंगे। शांति के लिए उत्पन्न किसी संकट की स्थिति में तीनों देश आपस में परामर्श करेंगे परंतु यदि तीनों देशों में से किसी एक का युद्ध फ्रांस के अतिरिक्त किसी अन्य देश से हुआ तो शेष दोनों राष्ट्र मैत्रीपूर्ण तटस्थता की नीति पर चलेंगे। इसमें यह भी प्रावधान किया गया कि इस इसका प्रयोग ब्रिटेन के विरुद्ध नहीं किया जाएगा। इस संधि का कई बार नवीनीकरण किया गया था। यह संधि सन 1914 के आरंभ तक वैध रही।

त्रिकोण समझौता (त्रि समाहित)

त्रिकोण समझौता, एक प्रकार से त्रिकोण संधि का प्रत्युत्तर था। इसकी स्थापना किसी एक संधि के द्वारा नहीं हुई बल्कि तीन अलग–अलग अवसरों पर द्विपक्षीय समझौतों के द्वारा यह त्रिकोण समाहित स्थापित किया गया। फ्रांस, रूस और ब्रिटेन के मध्य हुए समझौतों ने ही त्रि–समाहित को जन्म दिया। 1888 तक जर्मनी के सम्राट कैसर विलियम प्रथम तथा बिस्मार्क वृद्धअवस्था में पहुंच चुके थे। मार्च 1888 में विलियम प्रथम की मृत्यु हो गई तथा इसके उपरांत जर्मनी का नया शासक विलियम द्वितीय बना जो युवावस्था में था। जर्मन सम्राट विलियम द्वितीय को सभी महत्वपूर्ण निर्णय बिस्मार्क द्वारा लिया जाना पसंद नहीं था तथा इसके कारण सम्राट और चांसलर में मतभेद बढ़ गए और सम्राट ने बिस्मार्क को बर्खास्त कर दिया। इसके कुछ समय बाद ही बिस्मार्क की भी मृत्यु हो गई। 1890 से 1907 तक की अवस्था में शक्तियों के नए समीकरण सामने आने लगे। बिस्मार्क को बर्खास्त करने के बाद जर्मन सम्राट ने रूस के साथ पुनः आश्वासन संधि का नवीनीकरण करना आवश्यक नहीं समझा। इसके कारण रूस को नए मित्र की खोज आरंभ करनी पड़ी और उसका स्वाभाविक मित्र फ्रांस हो सकता था तथा इस मित्रता की ताक में फ्रांस सदैव से ही था। इस प्रकार 1891 में फ्रांस–रूस के मध्य एक मैत्री समझौता हुआ। अगस्त 1891 में हुए रूसी–फ्रांसीसी समझौते के द्वारा दोनों देशों ने मैत्री बनाए रखने तथा शांति भंग होने की स्थिति में पारस्परिक परामर्श का निश्चय किया। दोनों में से किसी एक पर विदेशी आक्रमण की स्थिति में रूस और फ्रांस दोनों ने मिलकर स्थिति का सामना करने की व्यवस्था भी की परंतु या एक सैनिक संधि नहीं हो पाई। यह प्रारंभिक समझौता था। इसके पश्चात दोनों देशों के नेताओं ने एक–दूसरे देशों की यात्राएं की जिसके फलस्वरूप 1894 में रूस तथा फ्रांस ने एक औपचारिक सैनिक संधि पर हस्ताक्षर किए। इस में यह प्रावधान किया गया कि यदि जर्मनी अथवा उसके किसी मित्र द्वारा रूस और फ्रांस पर आक्रमण हुआ तो वे दोनों देश एक–दूसरे को सैनिक सहायता प्रदान करेंगे। इस सैनिक प्रावधान को गुप्त रखा गया तथा इसे तब तक लागू रहने की व्यवस्था की गई जब तक त्रि–मैत्री संधि लागू रहेगी।

ब्रिटेन अलग–थलग रहने की नीति पर चल रहा था क्योंकि जर्मन तथा ब्रिटिश राजघरानों के मध्य रक्त संबंध थे। 1901 में महारानी विक्टोरिया का निधन हो गया। इसी बीच ब्रिटेन तथा जर्मनी के मध्य संबंध सुधारने को लेकर प्रयास चल रहे थे जो सफल नहीं हो सके क्योंकि जर्मनी के सम्राट विलियम द्वितीय को इसमें कोई रुचि नहीं थी। जर्मनी अपनी नौसेना को शक्तिशाली बनाने के प्रयास में व्यस्त था। इससे ब्रिटेन स्वयं को असुरक्षित महसूस कर रहा था। ब्रिटेन को अपनी नौसेना पर गर्व था तथा ब्रिटेन किसी अन्य देश की नौसेना को इतना सशक्त होता हुआ देख नहीं सकता था। यह सबसे प्रमुख कारण था। जिसने ब्रिटेन को फ्रांस के साथ मित्रता करने के लिए बाध्य किया। इसी बीच अफ्रीका में साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्धा तीव्र हो गई। फ्रांस और ब्रिटेन सूडान पर आधिपत्य को लेकर अफ्रीका में एक–दूसरे के सामने खड़े हो गए। युद्ध किसी भी क्षण आरंभ हो सकता था परंतु उस समय फ्रांस को किसी उपनिवेश से ज्यादा ब्रिटेन की मित्रता की जरूरत थी। इसी के कारण फ्रांस ने अपनी सेनाओं को पीछे कर लिया तथा ब्रिटेन ने सुडान पर आधिपत्य जमा लिया। इसी से दोनों देशों के बीच मैत्रीपूर्ण वार्ता आरंभ हुई इसी के फलस्वरूप 1904 में फ्रांस तथा ब्रिटेन ने अपने मतभेदों को दूर करके एक मैत्री संधि पर हस्ताक्षर किए। इसको सद्भावना संधि का नाम दिया गया। यह एक सैनिक संधि नहीं थी पर आगे चलकर इसने फ्रांस तथा ब्रिटेन की मैत्री को शक्ति प्रदान किया और जर्मनी के विरुद्ध पारस्परिक सहयोग का अवसर दिया। इस प्रकार 1904 में फ्रांस के दो मित्र थे रूस तथा ब्रिटेन पर इनमें कोई मित्रता नहीं थी.इनमें अनेक मतभेद थे। जर्मनी और ऑस्ट्रिया में बढ़ते सैन्य सहयोग को देखते हुए रूस तथा ब्रिटेन ने पारस्परिक राजनीतिक वार्ता आरंभ कर दी। इन दोनों देशों को निकट ले जाने में फ्रांस ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1907 में ब्रिटेन और रूस ने एक मैत्री समझौते पर दस्तखत किए और यह वचन दिया कि वे तिब्बत के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे। रूस ने अफगानिस्तान को ब्रिटेन को सौंप दिया तथा एक निर्णय लिया गया कि ईरान को तीन प्रभाव क्षेत्रों में बांटा जाएगा। एक पर ब्रिटेन का नियंत्रण तो दूसरे पर उसका तथा तीसरे पर दोनों का सामान्य नियंत्रण रहेगा। इस प्रकार फ्रांस के प्रयास से 31 अगस्त 1907 को इस समझौते पर औपचारिक हस्ताक्षर किया गया। इस समझौते के उपरांत इन तीनों देशों को त्रि–समहित गठबंधन के रूप में जाना जाने लगा।

इस प्रकार उपरोक्त दोनों गठबंधन एक दूसरे के विरुद्ध सैनिक प्रतिस्पर्धा में लगे रहे जिसके कारण संपूर्ण विश्व में अव्यवस्था तथा भय का माहौल तैयार हुआ।

आंग्ल–जापान मैत्री संधि 1902

1855 तक जापान विश्व राजनीति से पूरी तरह अलग रहा। इसके कुछ समय पश्चात जापान ने तीव्र गति से आधुनिकरण

किया और एशिया में अपनी स्थिति मजबूत कर ली। 1894–95 मे जापान ने चीन पर आक्रमण कर उसे पराजित कर दिया तथा इसके कई प्रदेशों पर कब्जा कर लिया। चीन का पड़ोसी रूस शक्तिशाली था, उसने जापान को धमकी देकर सारे विजित प्रदेशों को वापस लौटवा दिया। जापान ने इस अपमान का शीघ्र बदला लेने का निश्चय किया। जापान रूस पर आक्रमण करना चाहता था पर आक्रमण करने से पहले जापान को किसी बड़े शक्तिशाली देश की मित्रता की आवश्यकता थी। उस समय ब्रिटेन और रूस के मध्य मतभेद थे। अतः 1902 में जापान ने ब्रिटेन के साथ एक मैत्री संधि पर हस्ताक्षर किए. यह दोनों प्रमुख नौसैनिक शक्तियां थी।

आंग्ल–जापानी मैत्री संधि के द्वारा दोनों देश इस बात पर सहमत हुए कि यदि चीन या कोरिया में अपने विशेष हित की रक्षा की प्रक्रिया में ब्रिटेन या जापान का किसी अन्य देश से युद्ध हो जाता है तो दूसरा मित्र देश तटस्थ रहेगा और चेष्टा भी करेगा कि अन्य सभी देश तटस्थ रहें परंतु यदि युद्ध में कोई अन्य देश शत्रु की सहायता करता है तो तुरंत ब्रिटेन और जापान मिलकर शत्रुओ के विरुद्ध युद्ध लड़ेंगे। इसका अभिप्राय यह हुआ कि यदि जापान और रूस के मध्य युद्ध हुआ तो ब्रिटेन तटस्थ रहेगा और यदि फ्रांस, रूस की सहायता करता है तो तुरंत ब्रिटेन जापान की सहायता करेगा पर फ्रांस ब्रिटेन को अप्रसन्न करने की स्थिति में नहीं था। अतः यह स्पष्ट हो गया कि रूस जापान युद्ध में फ्रांस रूस की सहायता नहीं करेगा। इस प्रकार 1904–05 के युद्ध में जापान ने रूस पर आक्रमण कर दिया तथा किसी देश ने रूस की सहायता नहीं की और इस युद्ध में रूस पराजित हुआ. इस प्रकार पूर्व में जापान एक महाशक्ति के रूप में उभरा। इस प्रकार 1907 में रूस ने ब्रिटेन से अपने मतभेद दूर करते हुए मित्रता के समझौते पर हस्ताक्षर किए जिसके बारे में हम उपरोक्त कड़ी में चर्चा कर चुके है।

बोस्निया–हर्जेगोवीना पर ऑस्ट्रिया–हंगरी का अधिकार

बोस्निया–हर्जेगोवीना के क्षेत्र में अधिकतर दक्षिणी स्लाव जातिवासी निवास करते थे। सर्बिया एवं मोंटेनीग्रो निवासी भी इसी जाति के थे। बोस्निया–हर्जेगोवीना पर तुर्की का शासन था। बर्लिन कांग्रेस 1878 में इस प्रदेश को तुर्की की संप्रभुता में रहते हुए ऑस्ट्रिया के संरक्षण के अधीन कर दिया गया था। ऑस्ट्रिया–हंगरी ने साम्राज्यवादी होड़ को देखते हुए बोस्निया–हर्जेगोवीना को अपनी संप्रभुता के अधीन घोषित करके उस पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। सर्बिया ने इस कार्यवाही की निंदा की तथा कहा कि इन प्रदेशों को उसके साथ मिलाया जाना चाहिए। ऑस्ट्रिया–हंगरी ने बोस्निया–हर्जेगोवीना पर अधिकार कर के स्लाव राज्य की स्थापना का मार्ग बाधित कर दिया,जो बर्लिन की संधि की एक तरफा अवहेलना थी। इससे फ्रांस तथा रूस असंतुष्ट थे। सर्बिया ऑस्ट्रिया पर सैनिक कार्यवाही करना चाहता था पर किसी बड़े देश की सहायता के बिना ऐसा करना संभव नहीं था। 3 वर्ष पूर्व रूस जापान से पराजित हुआ था तथा वह इस समय किसी भी देश को सैनिक सहायता देने में समर्थ नहीं था। उस समय यह युद्ध तो टल गया पर इस घटना से तनाव में वृद्धि हुई तथा सर्बिया को अपमानित होना पड़ा जो कि आगे चलकर प्रथम विश्वयुद्ध का एक महत्वपूर्ण कारण बना।

मोरक्को संकट तथा बाल्कन युद्ध

मोरक्को को लेकर यूरोप में स्पर्धा तेज हो गई और इसी कारण 1905 तथा 1911 मे मोरक्को संकट उत्पन्न हुआ। सद्भावना समझौता 1904 (ब्रिटेन–फ्रांस) ने मोरक्को प्रदेश को फ्रांस और स्पेन में विभाजित किया। मोरक्को का अधिकांश भाग फ्रांस को दिया गया तथा फ्रांस ने इस क्षेत्र में अपनी स्थिति मजबूत कर ली तभी 1905 तथा 1911 में जर्मनी ने इस प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न करने के दो प्रयास किए. जर्मनी ने अपना एक युद्धपोत मोरक्को तट के निकट भेज दिया तथा जर्मनी ने यूरोपीय देशों के एक सम्मेलन में फ्रांस के अधिकार को समाप्त करने का प्रयास किया।

1911 में एक और संकट श्द्वितीय मोरक्कोश संकट उत्पन्न हुआ. मोरक्को में व्याप्त असंतोष का लाभ उठाते हुए फ्रांस ने अपने नागरिकों की रक्षा करने का बहाना बनाकर फेज में अपने कुछ सैनिक भेज दिए। जर्मनी ने फ्रांस से कुछ औपनिवेशिक छूट प्राप्त करने की दृष्टि से एक छोटा जंगी जहाज वहां भेज दिया। इसके परिणामस्वरूप एक संकट पैदा हो गया और युद्ध की बातें होने लगी। इस संकट में ऑस्ट्रिया और रूस निरपेक्ष बने रहे किंतु ब्रिटेन ने सार्वजनिक तौर पर फ्रांस को साथ देने की घोषणा कर दी। ब्रिटेन और फ्रांस के जनरल स्टाफ ने गुप्त सैन्य और नौसैन्य बातचीत की और इसे संधि का रूप दिया। सन 1912–13 के दौरान दो बाल्कन युद्ध लड़े गए। सन 1912 में बाल्कन देश बुल्गारिया, सर्बिया, ग्रीस और मोंटेनीग्रो रूस के संरक्षण में एकजुट हुए और उन्होंने बाल्कन संघ का निर्माण किया. इसका मुख्य लक्ष्य तुर्की को बाल्कन क्षेत्र से बाहर खदेड़ कर स्वतंत्रता प्राप्त करना था। बाल्कन देशों ने तुर्की के विरूद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। पहले बाल्कन युद्ध में 1 माह के भीतर बाल्कन देशों ने यूरोप में प्रत्येक तुर्की सेना को हराया और तुर्की को लगभग पूरे बाल्कन प्रायद्वीप से बाहर खदेड़ दिया। एक माह के भीतर जीते हुए नए क्षेत्रो को लेकर बाल्कन देशों के बीच युद्ध होना शुरू हो गया। इस युद्ध को द्वितीय बाल्कन युद्ध कहा गया जो अगस्त 1913 में समाप्त हुआ. बाल्कन युद्ध में सर्बिया ने अपने क्षेत्र को बढ़ाकर दोगुना कर लिया। इससे सर्बिया की महत्वकांक्षी और सैन्य क्षमता बढ़ी और ऑस्ट्रिया सर्बिया की महत्वाकांक्षा के प्रति और अधिक आशंकित हो गया। बाल्कन कि इस घटनाओं से बड़ी शक्तियों को भी यह स्पष्ट हो गया कि छोटे देशों को कूटनीतिक प्रणाली के तहत रखना महत्वपूर्ण है। 1914 में जब ऑस्ट्रिया के राजकुमार की हत्या हुई तो रूस यह जानता था कि वह 1908 और 1913 में सर्बिया की सहायता करने में विफल रहा था और यदि इस बार सर्बिया की सहायता नहीं करेगा तो बाल्कन पर से उसका प्रभाव खत्म हो जाएगा. बुल्गारिया, ऑस्ट्रिया–हंगरी और जर्मनी के समीप आ गया था। रूसी सरकार यह सोचती थी कि उसे अपनी सेना को मजबूत करने के लिए 3–4 वर्ष तो लगेंगे ही। जर्मनी ने सर्बिया को रोकने के लिए बाल्कन युद्ध में ऑस्ट्रिया का साथ नहीं दिया था इसका कारण यह था कि जर्मनी और ब्रिटेन के नीति निर्माता नौसेना, बगदाद रेलवे और अफ्रीका में पुर्तगाली उपनिवेशों के बंटवारे पर बातचीत कर रहे थे जो यूरोपीय युद्ध में ब्रिटेन को तटस्थ रखने पर राजी कर सकता था। फ्रांस, जर्मनी और ब्रिटेन के बीच की बातचीत को सहमी दृष्टि से देख रहा था. ब्रिटेन और फ्रांस रूस के इरादों के प्रति डरे हुए थे। इस प्रकार 1914 के मध्य तक यूरोप में संधि तथा गठबंधन पूरी तरह गड़बड़ हो गए थे।

उपरोक्त सभी संधियों तथा गठबंधनो का बारीकी से अध्ययन करने के बाद यह प्रतीत होता है कि इन संधियों ने पूरे यूरोप को कई गठबंधन तथा खेमों में विभाजित कर दिया, जिसमें प्रत्येक राष्ट्र अपनी सुरक्षा एवं आकांक्षाओं की पूर्ति हेतु किसी बड़े राष्ट्र का समर्थन हासिल करना चाहता था जिससे वह एक शक्ति संतुलन का हिस्सा हो सके।

प्रथम विश्व युद्ध के कारण

प्रथम विश्वयुद्ध की त्रासदी सर्वविदित है जिसने संपूर्ण विश्व में अस्थिरता उत्पन्न कर दी तथा इस अस्थिरता के कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं–

यूरोपीय शक्तियों का दो गुटों में विभाजन

यूरोपीय देशों ने आपस में गुप्त संधियां और समझौते किए जिनसे वे 1907 तक, दो गुटों में विभाजित हो गए जो त्रि–देशीय संधि और त्रि–देशीय सौहार्द संधि के नाम से जाने गए। इन संधियों का विस्तृत विवेचन उपरोक्त कड़ी ष्प्रथम विश्वयुद्ध की तरफ ले जाने वाली घटनाएंष् मे किया गया है फिर भी यहां संक्षिप्त प्रकाश डालना अनुचित नहीं होगा। बिस्मार्क 1870–90 तक जर्मनी का चांसलर रहा तथा इसी के फलस्वरूप जर्मनी ने ऑस्ट्रेलिया के साथ 1879 में एक संधि पर हस्ताक्षर किए। इस संधि के 3 वर्ष पश्चात इटली भी इसमें शामिल होना चाहता था तो इसके फलस्वरूप, 1882 में जर्मनी, ऑस्ट्रिया–हंगरी तथा इटली के बीच एक संधि हुई जिसे त्रि–देशीय संधि के नाम से जाना गया।

1904 मे ब्रिटेन और फ़्रांस ने एक मैत्री संधि पर हस्ताक्षर किए तथा 1907 में रूस और ब्रिटेन ने एक अलग संधि पर हस्ताक्षर किए जो फ्रांस के सहयोग से संपन्न हुई जिसे त्रि–देशीय सौहार्द संधि का नाम दिया गया। इस प्रकार 1907 तक यूरोप दो स्पष्ट गुटों में विभाजित हो गया तथा वे अन्य देशों को अपने साथ मिलाने की प्रक्रिया में लग गए। इससे एक गुट दूसरे गुट वाले देशों को अपना शत्रु समझने लगा। इस प्रकार असुरक्षा की भावना उत्पन्न हुई जिसने प्रथम विश्व युद्ध को जन्म दिया।

सैन्यवाद और अस्त्र शस्त्रों की होड़

युद्ध के उद्भव का एक कारण यूरोप में हथियारों की जबरदस्त होड़ को भी माना जाता है। इस होड़ का अनिवार्य लक्ष्य दो चीजों पर टिका था– बड़ी तथा सक्षम सेना को तैयार करने के लिए रूस जर्मनी फ्रांस तथा ब्रिटेन में होड़ लगी हुई थी। फ्रांस और जर्मनी ने अनिवार्य सेना भर्ती कार्यक्रम के द्वारा सेना के आकार में अभूतपूर्व वृद्धि की। रूस के पास विशाल सेना तो थी पर उसने अपने हथियारों के सुधार के प्रति ध्यान केंद्रित किया. इसके बाद फ्रांस तथा जर्मनी ने भी इस दिशा में अपने कदम को आगे बढ़ाया तथा एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में उभरे। ब्रिटेन के पास पहले से बड़ी तथा सक्षम सैना मौजूद थी जिसकी शक्ति अभूतपूर्व थी तथा ब्रिटेन की नौसेना का विश्व में कोई सानी नहीं था। 1898 में जर्मनी ने भी विश्व में अपनी मजबूत तथा बड़ी सेना में नौसेना को जोड़ने का प्रयास आरंभ कर दिया जो ब्रिटेन को पसंद नहीं आया। फ्रांस में जन्म दर गिरने से फ्रांस की संसद ने अनिवार्य सैनिक कार्यक्रम को 2 वर्ष से बढ़ाकर 3 वर्ष कर दिया पर यह प्रयास असफल रहा। रूस तथा जर्मनी ने अपनी सेना के ऊपर खर्च को और बढ़ा दिया जिसके कारण विश्व में सभी देशों ने अपना ध्यान सैन्यवाद की तरफ किया। हथियारों की होड़ तथा युद्ध की योजनाओं, जिनमें सबसे पहले और अत्यंत तेजी से वार करने के महत्व पर बल दिया गया था, के फलस्वरुप यह भावना व्याप्त हो गई कि युद्ध का आगमन देर–सबेर कभी भी हो सकता है तथा इसके लिए तैयार रहना बेहद जरूरी है। इस प्रकार सैन्यवाद प्रथम विश्व युद्ध का एक प्रमुख कारण बन गया।

आर्थिक साम्राज्यवाद

ब्रिटेन की औद्योगिक क्रांति तथा समूचे पश्चिमी यूरोप में तेजी से हुए औद्योगिकरण के कारण उपनिवेशवाद तथा साम्राज्यवाद को प्रोत्साहन मिला। इनमें से प्रत्येक औद्योगिक देश ने अपने साम्राज्य के विस्तार की चेष्टा की। यह विस्तार मुख्य रूप से एशिया और अफ्रीका में हुआ। प्रत्येक विकसित राष्ट्र सस्ते मूल्य पर कच्चा माल खरीदना चाहता था। उन्हें दासो जैसे सस्ते श्रमिक की तथा अपने उत्पादों के निर्यात के लिए बाजार की भी आवश्यकता थी। इस होड़ का प्रभाव यूरोप की राजनीति पर भी पड़ा. यूरोप के देश, यूरोप के बाहर अधिकांश प्रदेशों पर आधिपत्य स्थापित करना चाहते थे साथ ही वे यूरोप के भीतर आर्थिक, सैनिक और राजनीतिक रूप से शक्तिशाली भी होना चाहते थे. इससे साम्राज्यवादी प्रतिद्वंदिता तीव्र हो गई जो प्रथम विश्व युद्ध का कारण बनी।

राष्ट्रवाद की भावना

फ्रांस की क्रांति के बाद, यूरोप में राष्ट्रवाद की प्रमुख भूमिका हो गई थी। व्यवहार में देखा जाए तो राष्ट्रवाद एकता तथा विभाजन दोनों का ही कारण सिद्ध हुआ। राष्ट्रीय आकांक्षाओं के ही परिणामस्वरूप जर्मनी तथा इटली का पुनरूएकीकरण संभव हुआ. इसी राष्ट्रवाद की लहर ने तुर्की साम्राज्य के विघटन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा बाल्कन एवं पूर्वी यूरोप के अन्य प्रदेशों में राष्ट्रीय स्वतंत्रता की मांग को जोड़ पकड़ाया. राष्ट्रवाद के कारण कई देशों में मिथ्या धारणा भी बनी कि वे अन्य देशों की अपेक्षा श्रेष्ठ थे. ब्रिटेन ने यह कहना आरंभ किया कि उसका साम्राज्य श्वेत वर्ण के लोगों पर एक बोझ बना हुआ था। तो जर्मनी ने आर्य जाति को सर्वोच्च कहना आरंभ किया.इस प्रकार की भावनाओं ने जातिगत तथा राष्ट्रीय आधार पर श्रेष्ठता के लिए होड़ आरंभ कर दी जो प्रथम विश्व युद्ध के लिए उत्तरदायी था।

पूंजीवाद और युद्ध की उत्पत्ति

1914 तक, यह एक दृढ़ मार्क्सवादी विश्वास बन गया कि पूंजीवाद की प्रकृति में युद्ध अंतर्निहित होता है तथा युद्ध उस समय समाप्त होंगे जब पूंजीवादी अर्थव्यवस्था समाप्त हो जाएगी। मार्क्सवादीओ द्वारा यह तर्क दिया गया कि उद्योगपति तथा व्यापारी युद्ध से लाभ उठाने के लिए एकजुट हो गए थे तथा वे अपनी सरकारों के निर्णयों को प्रभावित करने में समर्थ हुए तथा अन्य सामग्रियों का निर्माण करने वाली बड़ी फर्मों जैसे जर्मनी में क्रुप,फ्रांस में स्नाइडर, ऑस्ट्रिया में स्कोडा, इंग्लैंड में आर्मस्ट्रांग ने अपने लाभ में वृद्धि करने के लिए जानबूझकर युद्ध को प्रोत्साहित किया. उपरोक्त सभी कंपनियों की रुचि अपने देश में रक्षा संबंधित सामग्री बनाने तथा दूसरे देशों को हथियारों की आपूर्ति करने में थी और इससे उन्होंने काफी लाभ कमाया। उपरोक्त सभी कंपनियां कच्चे माल के लिए विश्व के कई देशों पर आश्रित थी तथा उन्हें पता था कि अगर युद्ध हुआ तो व्यापार में बाधा उत्पन्न होगी जिससे नुकसान उठाना पड़ेगा। अतः पूंजीवाद स्वयं युद्ध के पक्ष में था ऐसा कहना संभव नहीं है। व्यापार संबंधित प्रेस,व्यापारिक घरानों के पत्राचार तथा बैंकिंग वाणिज्य और उद्योग के प्रवक्ताओं के वक्तव्यो से यह प्रतीत होता है कि अधिकांश व्यापारी शांति काल में ही लाभान्वित हुए। इस प्रकार जुलाई 1914 तक यह प्रतीत नहीं होता है कि सरकारें किसी राजनीतिक उद्योगपतियों, बड़े व्यवसायियों अथवा आर्थिक धारणाओं से किसी भी रूप से प्रभावित हुई थी।

शांति बनाए रखने के प्रयासों की विफलता

प्रथम विश्व युद्ध का एक महत्वपूर्ण कारण था कि उस समय तक कोई प्रभावी अंतरराष्ट्रीय संगठन स्थापित नहीं किए गए थे, जो विश्व शांति का प्रतिनिधित्व कर सकें। नेपोलियन की पराजय के बाद यूरोपीय व्यवस्था(ब्वदबमतज व ि म्नतवचम) नामक संगठन स्थापित किया गया परंतु वह केवल अनौपचारिक व्यवस्था थी। यूरोपीय व्यवस्थाओं के नेताओं ने बैठकों में शांति बनाए रखने पर जोर दिया तथा इनके प्रयास से कई युद्धों को टाला भी गया परंतु इसी काल में कई बड़े युद्ध भी हुए जिनमें 1877 का रूस–तुर्की तथा दो बाल्कन युद्ध, रूस–जापान युद्ध 1904–05 आदि। इस प्रकार यह संगठन पूर्णरूपेण शांति बहाल करने में सहयोग ना दे सका जो कि प्रथम विश्व युद्ध का कारण बना।

नेताओं की व्यक्तिगत महत्वकांक्षाएं

नेताओं की व्यक्तिगत अभिलाषाऐ एवं महत्वकांक्षाएं युद्ध का मार्ग प्रशस्त करती हैं। इसका सटीक उदाहरण प्रथम विश्वयुद्ध है।

जर्मनी का सम्राट कैसर विलियम द्वितीय इतना महत्वकांक्षी व्यक्ति था कि वह किसी समझौते के लिए तैयार ही नहीं हुआ। इसी कारण रूस को फ्रांस से संधि करनी पड़ी तथा ब्रिटेन को रूस से. कैसर विलियम द्वितीय की इच्छा थी कि पूरा यूरोप जर्मनी के नेतृत्व के अधीन आ जाए। रूस तथा ऑस्ट्रिया–हंगरी,तुर्की,सर्बिया के शासक भी इसी प्रकार महत्वकांक्षी थे। ऑस्ट्रिया–सर्बिया हित संघर्ष ने युद्ध का वातावरण तैयार कर दिया था तथा रूस के जार ने इस वातावरण में सर्बिया–ऑस्ट्रिया संघर्ष को और भी भड़का दिया. फ्रांस के नेता एल्सेस–लोरेन को पुनः हासिल करने के लिए प्रयासरत थे, जिससे वह अपना लौह अयस्क से समृद्ध भंडार को हासिल कर सकें। इसके लिए फ्रांस ने जर्मनी के विरुद्ध संधि और गठबंधन बनाने तैयार कर दिए जो आगे चलकर प्रथम विश्व युद्ध के लिए उत्तरदायी कारण सिद्ध हुआ।

समाचार पत्र तथा प्रेस की भूमिका

समाचार पत्र–पत्रिकाओं की नकारात्मक भूमिका भी युद्ध के लिए उत्तरदायी थी। युद्ध की पहली अवधि के दौरान कई देशों के समाचार पत्र एक दूसरे के विरुद्ध नियमित तौर पर आग उगलते रहे। इस बात के पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध है कि उनसे पूर्व के 40 वर्षों में अनेक देशों की सरकारों ने अपने पारस्परिक संबंध सुधारने की दिशा में बहुत से कदम उठाए थे परंतु समाचार माध्यमों द्वारा अन्य देशों के विरुद्ध किए गए शत्रुतापूर्ण प्रचार ने संबंध सामान्य बनाने की प्रक्रिया को विफल कर दिया। प्रेस तथा समाचार पत्रों ने कुछ मुद्दों को बढ़ा–चढ़ाकर पेश किया और आरोप–प्रत्यारोप के कार्य में तब तक लगे रहे जब तक कि अखबारी युद्ध शुरू नहीं हो गया.प्रेस ने जनमत को विषाक्त बनाया और इस प्रकार ऐसा वातावरण तैयार किया जिसमें युद्ध आवश्यक हो गया।

ऑस्ट्रिया–हंगरी तथा सर्बिया की प्रतिद्वंदिता

ऑस्ट्रिया–हंगरी तथा सर्बिया की प्रतिद्वंदिता तथा उनके मध्य संघर्ष ने विश्व युद्ध को जन्म दिया। ऑस्ट्रिया–हंगरी स्लाव प्रदेशों में अपना विस्तार करना चाहते थे। वे ऐसे प्रदेश अपने में मिलाने कोई इच्छुक थे जो समुद्र तट पर स्थित हो। उनकी सागर को स्पर्श करने की लालसा थी दूसरी और सर्बिया स्लाव राष्ट्रवाद का प्रतीक था और वह समस्त दक्षिणी स्लाव जाति को एक प्रभुसत्ता के अधीन लाने के प्रयास में जुटा था। यह दोनों परस्पर विरोधी आकांक्षाएं थी। ऑस्ट्रिया और सर्बिया के हितों में संघर्ष ने युद्ध का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

सैराईवो हत्याकांड 1914

28 जून 1914 को एक सर्व छात्र द्वारा ऑस्ट्रिया–हंगरी साम्राज्य के वारिस आर्चडयूक फ्रांज फर्डिनेंड (।तबीकनाम थ्तंद्र थ्मतकपदंदक) तथा उनकी पत्नी की हत्या कर दी। इस हत्या ने ऑस्ट्रिया–हंगरी सरकार को सर्बिया को उचित पाठ पढ़ाने तथा स्लाव समस्या का हल ढूंढने का अवसर प्रदान किया। इस प्रकार इस हत्या के अवसर का लाभ उठाने के लिए ऑस्ट्रियाथ–हंगरी ने सर्बिया पर आक्रमण कर दिया, जिसको जर्मनी का समर्थन प्राप्त था। बाल्कन समझौते का पालन करते हुए रूस ने सर्बिया का साथ दिया इस प्रकार शीघ्र ही अन्य अनेक देश युद्ध में कूद पड़े जिनकी अपनी अलग–अलग आकांक्षाएं थी। इस प्रकार यह स्थानीय ना होकर विश्वव्यापी बन गया. 28 जुलाई 1914 को ऑस्ट्रिया–हंगरी द्वारा सर्बिया पर आक्रमण करने के साथ ही विश्व युद्ध का आरंभ हो गया।

उपरोक्त सभी कारण प्रथम विश्व युद्ध के लिए उत्तरदायी हैं तथा इसी के फल स्वरुप प्रथम विश्वयुद्ध का उद्भव हुआ. ऑस्ट्रिया–हंगरी द्वारा सर्बिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा से ही संसार को एक महायुद्ध झेलना पड़ा. प्रथम विश्वयुद्ध कुल 1565 दिनों तक चला। युद्ध उस समय तक का सबसे भयंकर युद्ध सिद्ध हुआ। नवंबर 1918 में जर्मनी के बिना शर्त आत्मसमर्पण के साथ ही यह युद्ध समाप्त हुआ। औपचारिक रूप से 1919–20 की अवधि में मित्र राष्ट्रों तथा विभिन्न पराजित देशों के मध्य संपन्न शांति संधियों पर हस्ताक्षर होने के साथ ही शांति की स्थापना हुई। मित्र राष्ट्रों तथा पराजित जर्मनी द्वारा हस्ताक्षरित वर्साय की संधि सबसे अधिक महत्वपूर्ण संधि थी। यह संधि पराजित जर्मनी के साथ विचार विमर्श के पश्चात संपन्न में नहीं हुई थी। विजयी मित्र राष्ट्रों ने पेरिस के शांति सम्मेलन में इसका प्रारूप तैयार किया और पराजित जर्मनी पर इसको थोप दिया। जर्मनी ने इसे आरोपित संधि की संज्ञा दी तथा 28 जून 1919 को इस पर हस्ताक्षर किए। अन्य पराजित देशो ऑस्ट्रिया–हंगरी, बुल्गारिया तथा तुर्की के साथ अलग–अलग संधियां की गई। इन संधियों ने समस्त विश्व को प्रभावित किया तथा इन संधियों से कई देशों में द्वेष की भावना फैल गई। प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद विजयी राष्ट्रों द्वारा पराजित राष्ट्रो पर कड़े प्रतिबंध लगाए गए जिसमें आर्थिक प्रतिबंध,सैनिक प्रतिबंध, राजनैतिक प्रतिबंध आदि थे। जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव 1918 के बाद से देखने को मिला।

प्रथम महायुद्ध के प्रभाव

प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद इसका प्रत्यक्ष प्रभाव राष्ट्रवादी भावनाएं, लोकतंत्र के विकास, तत्कालीन समाज, संस्कृति तथा उपनिवेशो पर देखने को मिलता है।

शांति स्थापना के प्रयज्ञः पेरिस शांति सम्मेलन तथा वर्साय की संधि

11 नवंबर 1918 में युद्ध विराम पूरी तरह लागू हुआ तथा इसके 2 माह बाद जनवरी 1919 में पेरिस में शांति सम्मेलन बुलाया गया 30 से अधिक मित्र देश तथा सहयोगी राष्ट्रों के प्रतिनिधि पेरिस में एकत्रित हुए इसमें अमेरिका ब्रिटेन तथा फ्रांस ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

28 जून 1919 को जर्मनी से वर्साय की संधि पर हस्ताक्षर कराया गया। इस संधि में निम्नलिखित प्रावधान थ– जर्मनी को उसके 43 प्रतिशत क्षेत्र तथा 13ः आर्थिक संसाधनों से वंचित कर दिया गया. जर्मनी से एल्सेस तथा लोरेन प्रांत को फ्रांस को वापस दिलवाया गया। फ्रांस ने जर्मनी की खनिज संपदा से संपन्न सार क्षेत्र पर भी 15 वर्ष तक कब्जा जमाए रखा तथा इसके पश्चात इस के भाग्य का फैसला जनमत संग्रह पर छोड़ दिया गया। राइनलैंड से जर्मन सेना को अस्थाई रूप से हटा दिया गया जर्मनी के कुछ भाग्य बेल्जियम तथा डेनमार्क को दिए गए। जर्मनी के कुछ हिस्सों को पोलैंड में शामिल कर दिया गया। जर्मनी की थल सेना, नौसेना तथा वायु सेना पर कड़े प्रतिबंध भी लगाए गए। जर्मनी को उसके उपनिवेश ओ विदेशी निवेशकों और व्यापारिक विरु से वंचित कर दिया गया। जर्मनी आक्रमणों के प्रभाव के फल स्वरुप हुए नुकसान की भरपाई के लिए जर्मनी पर एक अरब पाउंड की क्षतिपूर्ति भी लगाई गई। संधि की धारा 231 के तहत प्रथम विश्व युद्ध के लिए जर्मनी तथा उसके साथियों को युद्ध दोषी ठहराया गया। इटली मित्र राष्ट्रों की तरफ से लड़ा था तो इसे ऑस्ट्रियाई तथा ऑटोमन साम्राज्य का बड़ा भाग दिया गया पर इसे फियूम नहीं मिला जिसकी इसे उम्मीद थी। इस कारण इटली ने स्वयं को ठगा तथा अपमानित महसूस किया. आकांक्षाओ के पूरा ना होने के कारण इटली एक संशोधनकारी शक्ति बन गया। बढ़ती हुई बेरोजगारी तथा महंगाई की पृष्ठभूमि में इटली में राजनीतिक अस्थिरता की स्थिति उत्पन्न हो गई जिसका लाभ उठाकर मुसोलिनी इटली की सत्ता में आया तथा इटली में फासीवाद नामक व्यवस्था का जन्म हुआ।

राष्ट्र संघ की स्थापना

इस भीषण युद्ध के बाद संसार में दीर्घकालीन शांति बनाए रखने के लिए यूरोपीय राजनीतिज्ञों ने 1919 में वर्साय की संधि के साथ

ही राष्ट्र संघ की स्थापना की। राष्ट्रपति वुडरो विल्सन इस प्रकार की संस्था स्थापित करने के प्रस्तावक थे। इस संस्था मुख्य लक्ष्य विश्व शांति बनाए रखना, अंतरराष्ट्रीय विवादों का शांतिपूर्ण समाधान करना, संधि की अवहेलना करने वाले देशों को दंड देना तथा समस्त विश्व में श्रमिकों सहित सभी नर–नारियों के सामाजिक आर्थिक जीवन स्तर को ऊंचा उठाना था। राष्ट्र संघ के तीन मुख्य अंग थे सभा, परिषद तथा सचिवालय. इस प्रकार प्रथम विश्व युद्ध के परिणामस्वरूप एक ऐसी संस्था का निर्माण संभव हो सका जो अंतरराष्ट्रीय शांति बहाल करने का हरसंभव प्रयास करेंकरें।

यूरोपीय साम्राज्य का विघटन

प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात केवल जर्मन साम्राज्य का ही भी विघठन नहीं हुआ बल्कि तीन और साम्राज्यो का तत्काल ही विघटन हो गया। रूसी साम्राज्य का अंत 1917 की क्रांति से हुआ, जिसमें इस युद्ध में भाग लेने से उपजे दबावों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके बाद हैप्सबर्ग साम्राज्य और ऑटोमन साम्राज्य का भी अंत हो गया। इन साम्राज्यो के विघटन के दूरगामी परिणाम हुए। जैसे ही इन साम्राज्यो का पतन हुआ, इनके उत्तराधिकारी राष्ट्रीय समूहों के बीच अनेक लड़ाइयां छिड़ गई जिसके फलस्वरूप ऑस्ट्रिया व हंगरी अलग अलग हो गए तथा स्वयं को गणतंत्र घोषित कर लिया। इसी तरह चेकोस्लोवाकिया ने भी अक्टूबर 1918 में स्वयं को गणतंत्र घोषित कर लिया. 1917 में,रूस में जार का साम्राज्य छिन्न–भिन्न हो गया था। इस प्रकार प्रथम विश्व युद्ध का परिणाम हुआ कि विश्व के 4 प्राचीन साम्राज्यो का विघटन हो गया। इन साम्राज्यो के विघटन के बाद इनमें से कई नए राष्ट्रों का गठन किया गया जिसमें पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया, युगोस्लाविया फिनलैंड, एस्तोनिया आदि थे।

संयुक्त राज्य अमेरिका का विश्व शक्ति के रूप में उभरना

प्रथम विश्वयुद्ध में संयुक्त राज्य अमेरिका ने एक अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। अमेरिका 1917 के अंत में इस युद्ध में ब्रिटेन और फ्रांस की तरफ से शामिल हुआ। इसके पहले अमेरिका इन देशों को युद्धक सामग्री की आपूर्ति कर रहा था। अंतिम चरण में अमेरिकी सैनिकों ने जर्मनी की हार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। शांति संबंधित निर्णय और संयुक्त राष्ट्र की स्थापना में भी अमेरिकी राष्ट्रपति विल्सन ने योगदान दिया। अमेरिकी अर्थव्यवस्था में औद्योगिकरण के क्षेत्रों में की गई प्रगति का लाभ उठाते हुए कई यूरोपीय देशों को ऋण प्रदान किया जिससे वह एक महत्वपूर्ण राष्ट्र बन गया। अमेरिका की अर्थव्यवस्था में एक ऐसा महत्वपूर्ण स्थान अर्जित कर लिया जो 1914 से पूर्व ब्रिटेन ने अर्जित किया था। अमेरिका में 1920 का दशक श्तेजी का दशकश के नाम से जाना गया। मोटर कारों का उत्पादन इसकी प्रमुख विशेषता बन गई। 1929 में अमेरिका में 50 लाख से अधिक कारें बेची गई। विश्व के पेट्रोलियम का 70ः, कोयले का 40ः और औद्योगिक क्षमता का 46ः भाग अमेरिका के पास था.1919– 29 के दौरान अमेरिका की निजी निवेश में 500ः तक की वृद्धि हो गई थी। इन सभी कारणों ने संयुक्त राज्य अमेरिका को एक महत्वपूर्ण स्थान दे दिया।

अभूतपूर्व जनहानि

प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान राष्ट्रों ने युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिए हर प्रकार की मानवीय, भौतिक, सैद्धांतिक और यहां तक कि विचारात्मक संसाधन जुटाए.आधुनिक राष्ट्रवाद ने सैनिकों और नागरिकों को शत्रुओं की पूर्णतरू पराजय करने की भावना से ओतप्रोत कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि यह युद्ध एक नरसंहार में परिवर्तित हो गया जो लगभग 4 वर्षों तक चलता रहा. भारी और हल्के आग्नेय अस्त्रों, मशीन गनों तथा लपटें उगलने वाले हथियारों ने शरीरों को चीर डाला और उन्हें गैस से विषाक्त बना दिया। हवाई बमबारी तथा रासायनिक हथियारों का भी प्रयोग किया गया हालांकि इन दोनों पर 1907 की हेग कन्वेंशन के अंतर्गत प्रतिबंध लगाए गए थे। 4 वर्षों में यूरोप ने 80 लाख लोगों को खो दिया इससे दोगुनी से अधिक संख्या में लोग घायल हुए तथा इनमें से तो कुछ आजीवन पंगु हो गए। ब्रिटेन में युद्ध से मरने वालों की संख्या उसकी कुल आबादी का 1.5ः थी जबकि फ्रांस में यह हिस्सा 3.5ः था। इन सभी देशों से ज्यादा पूर्वी यूरोपीय देशों ने कहीं अधिक नुकसान को उठाया क्योंकि उनके पास पर्याप्त हथियारों, आपूर्ति और चिकित्सक सेवाओं का अभाव था। यहां तक कि युद्ध के आरंभ होने के 1 वर्ष के भीतर मोर्चे पर डटे रूसी सेना के एक तिहाई सैनिकों के पास कोई हथियार भी नहीं था। युद्ध के दौरान तुर्की की जनसंख्या लगभग 17ः कम हो गई। इटली और ऑस्ट्रिया के मोर्चे पर युद्ध में 2 सप्ताह के दौरान ही 40000 व्यक्ति मारे गए तथा लगभग 28000 जख्मी हुए। पहले से ही तनाव अनुभव कर रहे तुर्की साम्राज्य ने ष्जाति के आधार पर हत्याओंष का अभियान छेड़ दिया जो 1915–16 में आर्मेनिया के लोगों के व्यापक नरसंहार के रूप में अपने चरम पर पहुंचा.इसमें 10 लाख से अधिक व्यक्तियों की मौत हुई। युद्ध के पश्चात जैसे सैनिक अपने अपने देश में वापस लौटे वहां इनफ्लुएंजा रोग फैल गया जिसने अकेले यूरोप में ही कम से कम 2 करोड़ लोगों की जान ले ली अर्थात यह संख्या युद्ध क्षेत्र में मारे जाने वाले सैनिकों की संख्या से दोगुनी थी। प्रथम विश्वयुद्ध में फावड़ा और कुदाल रायफलो के समान ही महत्वपूर्ण हो गए। एरिच मारिया रिमार्क ने अपनी पुस्तक "ऑल क्वाइट ऑन द वेस्टर्न फ्रंट" में पश्चिमी मोर्चे पर खुदी खाइयो में जीवन और मृत्यु के भय का वर्णन किया है तथा अनेस्ट हेमिंग्वे ने अपनी पुस्तक ष् फेयरवेल टू आर्म्सष् में युद्ध को दूर रखने की आवश्यकता को चित्रित किया है.यह दोनों ही उपन्यास 1919 में प्रकाशित हुए तथा दोनों बहुत लोकप्रिय भी हुए।

समाज पर प्रभाव

प्रथम महायुद्ध का समस्त यूरोपीय देशों के समाज और संस्कृतियों पर क्रांतिकारी प्रभाव पड़ा। इससे समाज के सभी वर्ग प्रभावित हुए यहां तक कि वे देश भी, जो युद्ध में शामिल नहीं हुए थे। सरकारों ने एक अभूतपूर्व स्तर पर सामाजिक जीवन के प्रत्येक पहलू को नियंत्रित किया। युद्ध के प्रयोजनों के लिए नागरिक, समाज तथा उद्योग एकजुट हो गए। 1915 में खाद्यान्न की कमी अत्यंत विषम हो गई। कोयला, जूते, साबुन, तेल, कपड़े, अंडे और मांस उपलब्ध ही नहीं थे। जमाखोरी और कालाबाजारी आम हो गई। इन परिस्थितियों ने व्यवस्थित समाज के ताने–बाने को छिन्न–भिन्न करने का कार्य किया। भोजन के लिए प्रतीक्षा करने वालों की लंबी–लंबी कतारें तथा भोजन के लिए दंगे आम बात हो गई। ग़ैर सैनिक समाज में भी मृत्यु दर बहुत बढ़ गई। लाखों पति और पिता मोर्चे पर डटे थे तथा अपने परिवार से दूर थे। लाखों महिलाएं औद्योगिक संयंत्रों में कार्य करने लगी क्योंकि उन्हें युद्ध से जुड़े सामग्रियों की पूर्ति मे अहम योगदान देना था। इससे पारिवारिक जीवन भी प्रभावित हुआ क्योंकि घर पर अपने बच्चों की देखभाल करने के लिए अभिभावक उपस्थित नहीं थे। करोड़ों युवा अपनी बेहतर परवरिश और शिक्षा को दांव पर लगाकर वस्त्र निर्माण संयंत्र में कार्य करने लगे इस प्रकार युद्ध ने सामाजिक जीवन तथा व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित किया। जर्मनी में कारखानों में काम करने वाली महिलाओं की संख्या इस युद्ध के दौरान बढ़कर 4 गुना हो गई थी। ब्रिटेन में 8 लाख महिलाएं केवल शस्त्र निर्माण कारखानों में कार्य करने लगी। महिलाओं को तीन प्रकार से बोझ उठाना पड़ता था अपने घर के

कामकाज, घर के लिए बाहर सवेतन नौकरी तथा बढ़ते हुए मूल्य और वस्तुओं की अनुपलब्धता के कारण भोजन, इंधन और अन्य वस्तुओं की कमी। युद्ध प्रयासों में महिलाओं द्वारा सक्रिय भूमिका निभाई जाने से उनके प्रति पुरुषों के दृष्टिकोण में व्यापक परिवर्तन आया और यह भी कि यूरोपीय महिलाओं के लिए युद्ध स्वतंत्रता आंदोलन की तरह था। महिलाओं को युद्ध प्रयासों में दिए गए उनके योगदान को मान्यता प्रदान करते हुए ही उन्हें मतदान करने का अधिकार प्रदान किया गया जैसे स्वीडन और डेनमार्क में महिलाओं को मतदान का अधिकार प्राप्त हो गया। जर्मनी ऑस्ट्रिया पोलैंड और कुछ अन्य देशों में महिलाओं ने 1918–19 के दौरान मतदान का अधिकार दिया गया था। वैसे स्त्रियां जो युद्ध में अपने पति या पिता को खो चुकी थी युद्ध समाप्त होने के बाद उनकी घरेलू स्थिति चरमरा गई तथा वे प्रायः अल्प सरकारी पेंशन पर ही अपना निर्वाह करती रही। अकेले जर्मनी में ही 20 लाख स्त्रियां ऐसी थी जिनके पति युद्ध में मारे गए थे। इस प्रकार प्रथम विश्व युद्ध ने समाज के ऊपर व्यापक प्रभाव डालें जिससे समाज में बदलाव तथा सामाजिक जीवन में घोर परिवर्तन हुए।

संस्कृति पर प्रभाव

युद्ध के केवल राजनीतिक और सामाजिक परिणाम ही नहीं हुए बल्कि इसमें चिंतन के तरीके चित्र,कला और संगीत,साहित्य और दर्शन पर भी एक गहरा प्रभाव डाला। समकालीन इतिहासकार युद्ध द्वारा बड़े पैमाने पर मचाई गई तबाही और हत्याकांड से स्तब्ध रह गए। इसने तर्क की शक्ति, प्रगति की अनिवार्यता, मानवजाति की नैतिक मर्यादा, स्वयं को जानने की हमारी क्षमता तथा लोगों और राष्ट्रों की सौहार्द से रहने की योग्यता के बारे में एक लंबे समय से विद्यमान धारणाओं को ध्वस्त कर दिया था। बीसवीं शताब्दी के आरंभ में, यह प्रतीत होता था कि सभ्यता ने संस्कृति की नई ऊंचाइयां छू ली है। प्रौद्योगिक उन्नति ने जीवन को आरामदेह बना दिया है तथा शांति और समृद्धि अस्थाई हो गई है। इस युद्ध के अनुभवों ने सभी क्षेत्रों में चिंतकों को न केवल परिनिर्वाण की विरासत पर बल्कि पश्चिमी सभ्यता की नीव पर भी विचार करने के लिए बाध्य कर दिया। इसने यह दर्शाया की प्रगति मे अस्त व्यस्तता और बुराइयां सृजित करने की पर्याप्त क्षमता है। मानव जाति का संघार करने तथा विनाश के लिए नई तकनीकों का प्रयोग किया गया और उन्हें बेहतर बनाया गया. इसने यह दर्शाया कि आधुनिकता एक भयानक संकट स्थिति किस प्रकार पैदा कर सकती है। प्रथम महायुद्ध ने उदारवादी लोकतांत्रिक मूल्यों पर आस्था में भी कमी की। यूरोप में भ्रमित और दिशा विहीन लोग फासीवादी और नात्सीवादी विचारधारा की ओर उन्मुख हुए जिस ने खुले तौर पर तर्कसंगत आधार को अस्वीकृत कर दिया तथा स्वयं मानव की उल्लंघनीयता का तिरस्कार किया। विशेष रुप से जर्मनी और इटली में व्याप्त तापमान की भावना से उत्पन्न ने मोह भंग ने भी इसे प्रोत्साहित किया.मुसोलिनी और हिटलर जैसे तानाशाह ओने इन भावनाओं का उपयोग किया तथा वे जनता के मन मस्तिष्क पर अत्यंत व्यापक रूप से कब्जा करने में सफल रहे। 19वीं सदी के अंत तक इनमें से अनेक प्रवृत्तियों का उद्भव होना आरंभ हो गया था। इस प्रकार प्रथम विश्व युद्ध के प्रभाव ने मानवीय संस्कृति को पूरी तरह प्रभावित किया ।

उपनिवेशों पर प्रभाव

प्रथम विश्वयुद्ध ने संपूर्ण विश्व को प्रभावित किया। यूरोपीय शक्तियों के समूचे विश्व में अत्यंत महत्वपूर्ण हित निहित थे तथा उन्होंने साम्राज्य बढ़ाने में अपने वैश्विक संसाधनों का उपयोग किया। फ्रांसीसीयो ने अफ्रीका के विभिन्न भागों में स्थित अपने उपनिवेशों मे सेना की टुकड़िया खड़ी की। ब्रिटेन ने साम्राज्यवादी सेना के रूप में भारतीय सेना का उपयोग किया। फ्रांसीसी सीमा पर जर्मनी की सेना से लड़ने के लिए एक पूर्ण टुकड़ी भारत से भेजी गई। ब्रिटेन के उपनिवेश भारत से प्रथम विश्वयुद्ध में कुल मिलाकर 15 लाख सैनिक सैनिक भेजे गए। यह संख्या सभी श्वेत उपनिवेशो के कुल सैनिकों के योगदान से कहीं अधिक थी। सामान शर्तों पर अपने उपनिवेशो से सैनिकों का प्रयोग करने से उपनिवेशो के आत्मसम्मान और आकांक्षाओं में वृद्धि हुई। यूरोपीय शक्तियों ने अपने उपनिवेश उसे अनिवार्य युद्ध सामग्री भी अर्जित की जिसका प्रभाव यूरोपीय उपनिवेशों के अर्थव्यवस्थाओं पर पड़ा। युद्ध के दौरान यूरोपीय शक्तियों ने अपने उपनिवेशो से जबरन श्रमिक तथा संसाधन प्राप्त किए जिससे उन उपनिवेशो के लोगों में यूरोपीय देशों के प्रति हीन भावना उत्पन्न हुई। इस युद्ध ने भारत, चीन,वियतनाम, मिश्र, अल्जीरिया तथा अनेक अन्य देशों में स्वाधीनता आंदोलनों को प्रेरित किया। इसी युद्ध के परिणाम स्वरुप राष्ट्रवादियों की एक नई पीढ़ी उभरी जो विदेशी शासन के विरुद्ध अपनी आवाज व्यक्त करने के नए नए उपायों की तलाश करने लगी। इस प्रकार प्रथम विश्वयुद्ध का प्रभाव ना सिर्फ तत्कालीन समाज,संस्कृति, जनमानस आदि पर पड़ा अपितु इसका प्रभाव उपनिवेशो पर भी पड़ा।

आर्थिक प्रभाव

प्रथम विश्व युद्ध के 1919 में ब्रिटिश पाउंड की कीमत 1914 की कीमत के मुकाबले एक तिहाई रह गई तथा जर्मनी में 1923 के अंत तक मार्क की कीमत भी घट गई। युद्ध के दौरान फ्रांस में कीमतें लगभग दोगुनी हो गई। महंगाई से सबसे ज्यादा मध्यम वर्ग के लोग प्रभावित हुए जिनकी आय निश्चित होती थी जबकि वस्तुओं के दाम दोगुने या तीन गुने हो गए। वर्साय की संधि के अनुरूप पराजित राष्ट्र जर्मनी के ऊपर लगभग एक अरब पौंड की क्षतिपूर्ति भी ला दी गई जिससे जर्मनी की अर्थव्यवस्था पूरी तरह से चौपट हो गई।

प्रथम विश्वयुद्ध का प्रभाव तत्कालीन समाज, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, उपनिवेश इत्यादि पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ा। प्रथम विश्वयुद्ध विश्व में मानव जाति द्वारा उठाए गए उनके कदमों का ही परिणाम था जिसे समस्त विश्व को भोगना पड़ा। अभूतपूर्व जनहानि, संसाधनों का अत्यधिक उपयोग ने मानव जाति के विकास की नकारात्मक पहलू को प्रदर्शित किया।

निष्कर्ष

प्रथम महायुद्ध मानव इतिहास का एक विनाशकारी युद्ध था। इस युद्ध में लगभग दो करोड़ लोगों की मृत्यु हुई और इससे भी अधिक गंभीर रूप से घायल हुए। युद्ध के बाद राजनेताओं ने शांति स्थापित करने का कार्य बहुत सावधानीपूर्वक किया गया परंतु 1919 में की गई संधियो ने गहन असंतोष के निशान छोड़ दिए। युद्ध के दौरान विश्व के 4 सबसे प्राचीनतम साम्राज्यो का विघटन हो गया। वर्साय की संधि में जर्मनी तथा इटली पर लगाए गए प्रतिबंधों ने इन देशों को अपने अपमान का बदला लेने के लिए बाध्य कर दिया। शांति बनाए रखने के लिए इन संधियों में कई संस्थाओं को स्थापित किया गया तथा निश्स्त्रीकरण की दिशा में कदम बढ़ाए गए। इस युद्ध के परिणामस्वरूप अमेरिका एक नए शक्ति के रूप में उभरा तथा विश्व में शक्ति संतुलन यूरोप से हटकर अमेरिका के पक्ष में चला गया। इस विनाशकारी युद्ध के अंत के 20 वर्ष बाद दुनिया को इससे भी अधिक विनाशकारी युद्ध को झेलना पड़ा तथा यह प्रत्यक्ष दिखता है कि प्रथम विश्वयुद्ध के परिणाम स्वरूप ही द्वितीय विश्वयुद्ध का बीज बो दिया गया। महायुद्ध की समाप्ति के बाद की गई संधियों ने अंतरराष्ट्रीय स्वरूप को परिवर्तित कर दिया। वर्साय की संधियो के स्वरूप, राष्ट्र संघ की कमजोरियां, नए राष्ट्रों के आपसी झगड़े, महामंदी का प्रारंभ और हिटलर तथा मुसोलिनी के उदय में

महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज भी इतिहासकारों में विभिन्न मतभेद है कि प्रथम विश्व युद्ध के लिए कौन से कारण उत्तरदायी थे तथा प्रथम विश्वयुद्ध ने कैसे द्वितीय विश्व युद्ध का मार्ग प्रशस्त किया? एक इतिहासकार का कहना है कि प्रथम विश्वयुद्ध बीसवीं शताब्दी की पहली विपदा थी जिसने आने वाली सभी विपदाओं को जन्म दिया। आज भी महा युद्ध के कारणों को लेकर इतिहासकारों में सहमति नहीं है पर फिर भी उपरोक्त कारण प्रथम महायुद्ध के लिए सटीक सिद्ध हुए, जिसने विश्व को एक ऐसे दलदल में धकेल दिया जहां पर मानव जाति की श्रेष्ठता को चुनौती दी गई।

संदर्भ सूची

1. John Grenville & Bernard Wasserstein] The Major International Treaties of the Twentienth century: A History and Guide with TeÛt] Routledge Publication] OÛon] United Kingdom] 2001.
2. प्रो.अनिरुद्ध देशपांडे, बीसवीं शताब्दी में विश्व इतिहास के प्रमुख मुद्दे – बदलते आयाम एवं दिशाएँ, आकार बुक्स पब्लिकेशन, दिल्ली–2011.
3. स्नेह महाजन, बीसवीं शताब्दी में विश्व इतिहास, मैकमिलन पब्लिकेशन, दिल्ली–2010.
4. वी. एन. खन्ना, अंतरराष्ट्रीय संबंध, 5 वां संस्करण, विकास पब्लिकेशन हाउस, नोएडा, उत्तर प्रदेश–2013.

5- Pavneet singh. International Relations] MC Graw hill education publication] Banglore, India–2019.